सन 1990 के बाद महिला लेखन में व्यक्त दलित संघर्श की अभिव्यक्ति
संदर्भ – रमणिका गुप्ता लिखित बहू जुठाई कहानी संग्रह

डॉ.आर.पी.भोसले

हिंदी विभागाध्यक्ष,

कला, वाणिज्य महाविद्यालय, पुसेगाव जिला–सातारा

प्रस्तावना–

आधुनिक हिंदी साहित्य में रमणिका गुप्ता जी का अग्रण्य स्थान है। वह दलित साहित्य की एक सशक्त हस्ताक्षर है। वह हिंदी दलित साहित्य की ऐसी अनूठी उपलब्धि है, जो स्वयं दलित न होकर दलित एवं दलित साहित्य को समझने की अंतर्दृष्टि रखती है। वह एक ऐसी बहुआयामी व्यक्तित्ववाली महिला है, जिसके अंदर मुक्ति की अनोखी छटपटाहट तो है ही जिनमें खास व्यक्तिगत पहलु भी है, जो कि उसकी रसिकता का परिचय करता है। नाटक, नृत्य, संगीत के प्रति उनकी रूचि अधिक है। वह एक कवयित्री ही नहीं पत्रकार भी है। वह स्वातंत्र्यपूर्व काल से लेकर इक्कीसवीं सदी के आरंभ तक सृजनात्मकता में लीन रही है।

साहित्य को यदि साहित्यकार के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति भी कह दे तो अतिश्योक्ति न होगी किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्व काफी हद तक अनुवांशिक परंपराओं एवं सामाजिक वातावरण, शिक्षा–दीक्षा, संबंधों, संस्कारों तथा वैयक्तिक परिस्थितियों एवं उनके बाहय एवं आंतरिक द्वंद्व से निर्मित एवं विकसित होता है।

भारत में दलित शब्द का प्रयोग प्राचीन है। 'दलित' शब्द की उत्पत्ति संस्कृति के 'दल' धातु से हुई है।जिसका अर्थ है 'मसला, रौंदा या कुचला हुआ। डॉ. पुरूषोत्तम सत्यप्रेमी का मानना है कि ष्समता के अस्मिता दर्शी प्रगतिशील समाज

एक मानवी मूल्यों की स्थापना के लिए संघर्षशील लोग ही दलित है। आज पिछडे वर्ग अनुसूचित जाति, जनजाति ही अपनी अस्मिता के लिए संघर्षरत हैष[1]प्रभाकर मांडे के अनुसार 'जिनका मनुष्य के नाते जीने का हक छीन लिया, वे दलित है। म.गांधीजी ने अस्पृश्यों और दलितों को हरिजन संज्ञा से विभूषित किया है षडॉ. बाबासाहेब चाहते है कि दलित और बहुजन तमोयुग की तरफ नहीं तेजोयुग की तरफ बढें।ष[2]

आज के वैज्ञानिक युग में नारी और पुरूष के चरित्र के मापदंड अलग–अलग है। विडम्बडना यही रही है कि नारी के लिए से पुरूष प्रधान समाज व्यवस्था द्वारा घटिया मान्यता है। आज भी जैसे की वैसी ही स्थिति है। साधारण नारी हो या उच्चवर्णीय की नारी हो अपने लिए काफी परिश्रम उठाती है। दलित समाज जहाँ एक ओर अपने अंदर एक मध्यमवर्ग के उदय से जुडी समस्याओं से जूझ रहा है। दलित महिलाओं की त्रासदी यह है कि उन्हें एक ब्राम्हणवाद का तो दूसरे गाल पर पितृसत्ता की थप्पड खानी पडती है। सामाजिक क्रांति में नारी को भी पुरूष वर्ग की सहयोगी बनना चाहिए उसी का नेतृत्व रमणिका गुप्ता ने किया है, षउन्होंने अपने कहानी साहित्य में आंदोलन कर्ता स्त्री को वेदी पर चढनेवाली 'सीता' नहीं अस्तित्व के लिए लडनेवाली क्रांति बनाया है ।ष[3]

'परबतिया' *कहानी में परबतिया का शोषण अपने पति द्वारा होता है। पति उसे खूब पीटता है। वह शोषण सहती रहती हैं। इतना ही नहीं हो तो परबतिया ने अपने जीजा जी को पिता समान माना, उसके द्वारा यौन शोषण का शिकार होती है। एक दिन परबतिया को घर और जमीन की लालच. में जबरन पिता के उम्र के जीजा से विवाह करना पडता है। वह अस्मिता के सवालों के घेरे में आ खडी हुई है। वह बेटी थी, या माँ, बहन थी। या सौतन, पत्नी थी या रखैली, वह समझ नहीं पा रही थी। उसके सामने सारे गडमड हो गए थे। पारिवारिक रिश्तें अनायास ही बदलते रहें पारिवारिक मूल्य विघटन होता रहा।*

'जिरबा' कहनी में जिरबा माय पति के साथ –साथ समाज से यौन शोषण की शिकार हुई दूसरी ओर बेटी जिरबा भी पति द्वारा, मित्र द्वारा और समाज द्वारा शोषण का शिकार होती है। वह प्रतिकार भी करती है। वह ममता मई नारी है। जीवन भर पास न रहनेवाला पति और ठोकरें खाते हुए बच्चे को पालती हुई जिरबा माय अपने पति के जीवन के अंतिम क्षण में उसे अस्पताल में भर्ती करती है। उसकी सेवा करती है 'चमेली' कहानी में औरत होने के दु:ख को चमेली व्यक्त करती है। उसके जवानी में बूढे पुरूष के साथ विवाह होता है समाज और सौत के गंदे विचारों से त्रस्त चमेली पर आरोप लगाए जाते है। उसे कोयला खदान में सहजता से नौकरी नहीं मिलती है। वहाँ के मुंशी ठेकेदार उस पर बुरी नजर रखते हैं। उसे औरत होना ही गुनाह लगता है। बहू जुठाई कहानी में नई नवेली दुल्हन की बहू जुठाई की रस्म निभानी पडती है। पहली रात वह ठाकुर के घर में बिताती है। यह स्थिति उस देश में है, जहाँ नारी की पूजा होती है। यदि कोई विरोध करता है, तो ठाकुर द्वारा उसका बुरा हाल किया जाता है। कहानी की भाभी जब ठाकुर के घर जाने को नकारती है, तो उसका इतना हाल किया जाता ही कि पूछो मत – ष्भाभी को झोंट से पकड के खींचता बराहिल पठान ऐसे ले गया जैसे द्रौपदी को दु:शासन। वहीं भाभी को नाचने गाने को हुक्म दे दिया ।ष[4] नारी दोहरे शोषण की शिकार हुई है। असलियत तो यह है कि दलित महिलाओं का अपने जिस्म पर कोई अधिकार नहीं है। उपेक्षित जीवन तथा निरंतर शोषण से आक्रांत नारी वर्ग में नवयुग चेतना का उन्मेष हुआ है। रमणिका गुप्त की कहानियों में नारी स्वतंत्रता के प्रश्न को लेकर संघर्ष क्षेत्र में उपस्थित हुई।

निष्कर्ष –

अंत में कहा जाता सकता है कि कहानी की नारी दर्द के ठोकरे खाकर अपनी पहचान बनाती है। प्यारी, परबतिया, चंदा, चमेली आदि अपना स्व अस्तित्व विशद करती रही। दलित परिवेश में नारी जागरण चेतना के अंतर्गत अमूल्य

परिवर्तन दिखाए है। इन्होंने नारी समाज का यथार्थ चित्रण किया है। इन नारियों में परम्पराओं के प्रति मोह नहीं रहा। नई मान्यता एवं बदलाव ने निजता प्रदान की। आलोच्य कहानी की नारी के कथनी में और नारी जीवन में युगीन चेतना के सूक्ष्म दर्शन भी हुए है। यह नारियाँ चेतनशील है, जो अपने अधिकारों के लिए लडती है। जिन्होंने जीवन में विविध पक्षों में अनंत यातनाएँ सहकर भी संघर्ष को ही अपनाया है। दलित नारी तो दुहरा शोषण सहती है। भारतीय समाज की नारियाँ पितृसत्ता के बोझ के नीचे कराह रही थी। लेकिन दलित नारियों को न केवल अपने समाज की पितृसत्ता को झेलना पडता था। बल्कि सवर्ण समाज की पितृसत्ता भी उसका शोषण और दमन करता था। इस कारण वह जातिगत रीति–रिवाजों और बंधनों में ही रखने या रहने के लिए विवश है।

संदर्भ सूची –

डॉ.एन.सिंह, 'दलित साहित्य का चिंतन के विविध आयाम', पृ. 20

कथ्य रूप, अप्रैल–जून 1966, पृ. 22

डॉ.सरोज पगारे, 'हिंदी दलित साहित्य आंदोलन', विकास प्र., कानपुर, 2012, पृ. 131

डॉ.रमणिका गुप्ता, 'बहू जुठाई', कहानी संग्रह, पृ.18

सहाय्यक ग्रंथ–

डॉ.भरत सगरे, 'दलित साहित्य चिंतन के आयाम', कानपुर प्रकाशन, प्र.सं.2011

डॉ.वंदना मोहिते 'आठवे तथा नव्वे दशक के हिंदी उपन्यासों में नारी', अन्नपूर्णा प्रकाशन, प्र.सं.2007

डॉ.भरत सगरे, 'दलित साहित्य चिंतन के आयाम', उन्मेश प्रकाशन, प्र.सं.2009 डॉ. सरोज पगारे, 'हिंदी दलित साहित्य आंदोलन', विकास प्र., कानपुर, 2012

डॉ.अभय परमार, 'हिंदी दलित आत्मकथाएँ एक अनुशीलन', कानपुर, प्र.स.2011

'राष्ट्रवाणी' द्वैमासिक पत्रिका, नवबंर – दिसंबर 2012, अंक –4